32 PAGES ANSER BOOK

विषय Subject : हिन्दी

विषय कोड Subject code : 0 5 1

परीक्षा की दिनांक Date of Exam : 2 3 2

उत्तर देने का माध्यम Medium of answerwise paper : हिन्दी

प्रश्न पत्र का सेट Set of the Question paper : A

गोले भरने हेतु उदाहरण :-
सही तरीका :- ● ○ ○ ○
गलत तरीका :- ⊗ ⊘ ○ ◐ ◉

नोट :- इस शीट को भरने पूर्व इस पृष्ठ के पीछे दिए उदाहरण को देखें।

कार्यालय उपयोग के लिए

ID NO. 6594255
SUB. 051 - HINDI
Enq. 60511085

केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
कुल प्राप्तांक शब्दों में		कुल प्राप्तांक अंकों में

ST-16 A

www.oddiyindia.com

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
	राधेश्याम चौहान (उच्च माध्यमिक शिक्षक)

(2) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | कुल अंक

EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD

प्रश्न क्र

प्रश्नोतर क्र०-1

उ० 1 चार कालों में

उ० 2 कपड़े पहनती है

पैसे की

उ० दत्ताजी राव के यहाँ

उ० 5 नाभिक

उ० 6 शब्दालंकार

BSE

प्रश्नोतर क्र-02

1 खेत की तुलना कागज के पन्ने से की गई है।

2 यशोधर बाबु ने दफ्तर से लौटते हुए रोज बिड़ला मन्दिर जाने की रीति अपनाई।

3 जिस वाक्य मे एक उद्देश्य तथा एक विधेय होता है उसे सरल वाक्य कहते है।

4 जिन छन्दो मे मात्राएँ जि गिनी जाती है उन्हें मात्रिक छन्द कहते है।

5 संवाद लिखते समय लेखक गायब हो जाता है।

③ [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 3 के अंक | कुल अंक

क्र.

6. लुट्टन के माता-पिता उसे नौ वर्ष की उम्र में ही अनाथ बनाकर चले गए थे।

7. बिहारी रीतिकाल में वीर रस के कवि हुए हैं।

प्रश्नोत्तर क्र-03

1. हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग - भक्तिकाल
2. छायावाद के प्रवर्तक कवि - जयशंकर प्रसाद
3. मस्ती का सन्देश - हरिवंशराय बच्चन
4. चौपाई छन्द - 16 मात्राएँ
5. चित्रकार - चितेरा
6. संपादकीय पृष्ठ - अखबार की अपनी आवाज

प्रश्नोत्तर क्र-04

(i) सोरठा छन्द मात्राओं की दृष्टि से दोहा छन्द का उल्टा होता है।

(ii) मुहावरा ऐसा लघु वाक्यांश है जिसके प्रयोग से भाषा में सौंदर्य उत्पन्न होता है।

(iii) रेडियो नाटक में पात्रों की पहचान संवाद व ध्वनि प्रभाव के माध्यम से होती है।

(iv) सिन्धु घाटी सभ्यता में अंगूर, खजूर व खरबूज फल उगाए जाते थे।

प्रश्न क्र.

उ० (v) लुट्टन पहलवान के ढोलक की आवाज मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती थी।

उ० (vi) चन्द्रगुप्त जयशंकर प्रसाद की नाट्य रचना है।

उ० (vii) कवि ने स्लेट पर लाल खड़िया चाक मलने की बात कही है।

प्रश्नोत्तर क्र-05

(i) शोषकों के प्रति घृणा और शोषितों के प्रति करुणा प्रगतिवाद है। सत्य

(ii) कवि ने हार कर बात को कील की तरह ठोक दिया। सत्य

(iii) शेर के बच्चे का असल नाम लुट्टन सिंह पहलवान था। असत्य

(iv) सौंदलगेकर मास्टर कविता बहुत ही अच्छे ढंग से कविता पढ़ाते थे। सत्य

(v) राष्ट्र भाषा के लिए संपर्क भाषा शब्द का प्रयोग किया जाता है। सत्य

(vi) शब्द-शक्ति पाँच प्रकार की होती है। असत्य

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र-06

कवि उमाशंकर जोशी जी ने अपने खेत में शब्द रूपी बीज बोया था। कवि इस शब्द रूपी बीज को कल्पना रूपी खाद देकर अपने चौकोर कागज रूपी खेत पर एक उत्तम साहित्यिक कृति का निर्माण करता है।

प्रश्नोत्तर क्र-07 (अथवा)

लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध में जब लक्ष्मण मेघनाद द्वारा छोड़ी गई शक्ति से मूर्च्छित हो जाते हैं तो हनुमान लक्ष्मण के लिए संजीवनी बूटी लेने जा गए थे।

प्रश्नोत्तर क्र-8

जब बाजार जाते समय जेब भरी हो और मन खाली हो तो व्यक्ति के मन को बाजार की हर वस्तु काम की लगती है और वह उसके आकर्षण में फँसकर बहुत सारा गैर-जरूरी सामान खरीद लेता है, उसके मन में भटकाव होता है।

प्रश्नोत्तर क्र-9

शिरीष का पेड़ वसंत ऋतु के आगमन के साथ खिलता है और भादो-आषाढ़ तक खिला रहता है। जब समस्त वनस्पति जेठ माह की गर्मी में सूख जाती है तब शिरीष नीचे से ऊपर तक खिला रहता है।

[redacted]

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 0 के अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र

प्रश्नोत्तर क्र -10

लेखक आनंद के पिता ने पाठशाला भेजते समय नि.लि. शर्त रखी:-

i) पाठशाला जाने जाने से पहले ग्यारह बजे तक खेतों में काम करना होगा।
ii) सुबह खेत पर बस्ता लेकर जाना होगा।
iii) छुट्टी होने पर सीधे खेतों में जाकर घंटा-भर पशुओं को चराना होगा।
iv) अगर किसी दिन ~~पाठश~~ खेतों में ज्यादा काम हो तो पाठशाला से छुट्टी लेनी होगी।

प्रश्नोत्तर क्र -12

जहाँ उत्साह नामक स्थायी भाव का विभाव, अनुभाव और संचारी भाव संयोग होता है उसे वीर रस कहते है।

उदाहरण:-

बुन्देलो हरबोलो के मुहँ हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

प्रश्नोत्तर

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र - 13 (अथवा)

जहाँ शब्द के प्रचलित अर्थ से परे या उससे संबन्धित अन्य अर्थ का बोध हो उसे लक्षणा शब्द-शक्ति कहते हैं।

उदहरण:- • मोहन गधा है। (यहाँ गधा शब्द मूर्खता का लक्षण है।)

प्रश्नोत्तर क्र - 14

तकनीकी शब्द अंग्रेजी भाषा के टेक्निकल शब्द का हिंदी पर्याय है। तकनीकी शब्द वह शब्द है जो किसी निर्मित अथवा खोजी गई वस्तु अथवा विचार को व्यक्त करता है।

★ प्रमुख तकनीकी शब्द ★

(i) कोशिका - Cell
(ii) पारिस्थितिकी - Ecology

प्रश्नोत्तर क्र - 15

(i) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।

(ii) जंगल में शेर दहाड़ने लगा।

8 [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 8 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र-16

तुलसीदास

i) दो रचनाएँ - • विनयपत्रिका
• रामचरितमानस
• दोहावली

ii) भावपक्ष:-

• राम चरित्र की प्रधानता - तुलसीदास का संपूर्ण काव्य राममय है। इन्होंने राम का गुणगान करने वाले साहित्य को सार्थक मानक है। भगवान राम इनके आधार है।

• लोकमंगल की कामना - तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल की कामना है। इनके प्रभु राम ~~लोककल्याणी~~ लोककल्याणकारी है।

• शक्ति, शील और सौन्दर्य - तुलसीदासजी ने अपने काव्य में प्रभु राम की शक्ति, सहनशीलता व सौन्दर्य का अत्यन्त मनोरम ब वर्णन किया है।

कलापक्ष:-

• भाषा - तुलसीदासजी ने अपने काव्य में मुख्य रूप से अवधी तथा ब्रज भाषा का प्रयोग किया

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

। रामचरितमानस महाकाव्य अवधी भाषा की रचना है तथा कवितावली ब्रज भाषा की रचना है। इनकी भाषा में कहीं-कहीं राजस्थानी, बुन्देलखण्डी व भोजपुरी भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं।

शैली- तुलसीदासजी ने अपने से पहले कवियों द्वारा प्रयुक्त सभी शैली शैलियों का प्रयोग अपने काव्य में किया है।

रस योजना- तुलसीदासजी ने अपने काव्य में शृंगार रस के दोनों पक्षों वियोग शृंगार व संयोग शृंगार का सुन्दर प्रयोग किया है।

अलंकार योजना- तुलसीदासजी ने अपनी रचनाओं में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, स्वरमैत्री, पदमैत्री पदमैत्री आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है।

छन्द योजना- तुलसीदासजी ने अपनी रचनाओं में सोरठा, दोहा, कवित्त, सवैया आदि छन्दों का भी सुन्दर प्रयोग किया है।

(iii) साहित्य में स्थान- तुलसीदासजी ने निरन्तर अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य की अभूतपूर्व सेवा है। इनकी रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ रामचरितमानस ब्रज हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है साथ ही यह रचना अद्वितीय है। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का वर्णन केवल तुलसीदास ही कर पाए हैं। हिन्दी साहित्य इनके योगदान का सदैव ऋणी रहेगा।

B
S
E.

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र - 17

धर्मवीर भारती

(i) दो रचनाएँ - • अन्धा युग
• कनुप्रिया
• गुनाहों का देवता

(ii) भाषा:- धर्मवीर भारतीजी ने अपनी रचनाओं मे सदैव सीधी, सरल व भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। इनकी भाषा पात्रानुकूल भी है। इनकी भाषा में अंग्रेजी, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं के शब्दो का भी आवश्यकतानुसार प्रयोग हुआ है। गंभीर विषयों मे इनकी भाषा में दुरूहता आ गई है।

BSE

शैली:- धर्मवीर भारती की शैली निः लि रूपों मे है:-

(i) भावात्मक शैली:- भा भारतजी ने ~~अपने~~ अपनी रचनाओं में किसी गंभीर विषय अथवा घटना का वर्णन करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया है।

(ii) व्यंग्यात्मक शैली - समाज मे व्याप्त अन्धविश्वासो व रूढ़ियों का वर्णन करने के लिए ~~कवि~~ भारतजी ने इस शैली का प्रयोग किया गए। इस शैली मे कटु व्यंग्यो की प्रधानता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(iii) वर्णनात्मक शैली- किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना का वर्णन करने के लिए इन्होने इस शैली का प्रयोग अपनी रचनाओ मे किया है।

(iv) मनोवैज्ञानिक शैली- अपनी रचनाओ मे व्याप्त पात्रों के अन्र्तमन की भावनाओ व कथनो का व्यक्त करने के लिए भारतजी ने इस शैली का प्रयोग किया है।

(v) विवेचनात्मक शैली- किसी विषय पर गंभीर चिन्तन तथा विस्तारपूर्वक वर्णन के लिए इन्होने विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया है। इस शैली मे ~~के~~ तर्क-वितर्क की भी प्रधानता है।

B
S
E

(iii) साहित्य मे स्थान:- धर्मबीर भारती की सभी रचनाएँ जिन्हे जिनमे उपन्यास, निबन्ध, संस्मरण, कहानी आदि सभी सम्मिलित है ये हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इनकी सीधी सरल भाषा के कारण इनकी रचनाएँ अलग-अलग वर्ग के लोगों मे लोकप्रिय है। इन्होने निरन्तर अपनी रचनाओ के माध्यम से समाज मे व्याप्त अंधविश्वासो, रूढ़िवादी परम्पराओं का घोर विरोध किया है। गुनाहो का देवता हिन्दी ~~साहित~~ साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। अपनी लेखनी के माध्यम से इन्होंने हिन्दी साहित्य की अभूतपूर्व सेवा की है। इनके योगदान के लिए हिन्दी साहित्य सदैव इनका ऋणी रहेगा।

प्रश्न :

प्रश्नोत्तर क्र - 18

'जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से महान है'- यह कथन सत्य है क्योंकि इस जग में जन्म देने वाली माँ (जननी) और जन्म के बाद हमें अन्न प्रदान करने कवाली मातृभूमि (जन्मभूमि) दोनो ही स्वर्ग से समान है। हमारी माँ हमारी सदैव सभी कष्टों से रक्षा करती है तथा हमारी जन्मभूमि हमें जीवित रहने के लिए अन्न प्रदान करती है, हमें स्वस्थ रखने के लिए एक अनुकूल वातावरण का निर्माण करती है। इन दोनों की अभूतपूर्व सेवा के लिए हम सदैव इनके ऋणी रहते है। इसलिए ये दोनों ही स्वर्ग से महान है।

E
S
E

प्रश्नोत्तर क्र-19 (अथवा)

उ० (i) गद्यांश का शीर्षक:- हास्य - व्यंग्य के लाभ ।

उ० (ii) हास्य व्यंग्य एक ऐसा माध्यम है जो नीरस जीवन को सुखद बना देता है।

उ० (iii) गद्यांश का सार:- हास्य-व्यंग्य जीवन का सुखद बनाता है तथा जिस व्यक्ति ने कभी हँसना न सीखा उसे वास्तव में जीना भी सिखाता है। दुर्लभ जीवन को जीने योग्य बनाने के लिए हास्य व्यंग्य बहुत आवश्यक है। हास्य-व्यंग्य एक प्रकार से हमें संघर्ष, तनाव, घुटन आदि से बचाने की एक देन भी है।

MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECO

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्र-20

सबसे तेज _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ झुंड को

संदर्भः- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक आरोह में संकलित कविता पतंग से अवतरित है। इसके रचयिता कवि अलोक धन धन्वा है।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश में शरद ऋतु के प्राकृतिक सौन्दर्य तथा उसमे बच्चों की पतंग उड़ाने की क्रियाओं का वर्णन है।

B
S
E

व्याख्या- कवि अलोक धन्वा कहते है कि सबसे तेज बारिश वाला महीना भादो अब चला गया है। भादो के अन्धकार भरे दिनो को दूर करने के लिए खरगोश की आखो के समान लालिमा लिए नया सूरज आकाश मे आ गया है। इस मौसम मे शरद ऋतु मानो एक साईकिल पर सवार हो पुलो को पार करती हुई आ रही है जैसे वह इन नन्हे पतंगबाजो को स्पष्ट संकेत दे रही है कि वे समूहो मे आए और इस खुले, स्वच्छ व अनुकूल वातावरण मे पतंग उड़ाने मे मस्त हो जाए। शरद ऋतु अपनी चमकीली साईकिल पर सवार हो इन नन्हे बच्चों को पतंगे उड़ाने का स्पष्ट संकेत दे रही है।

काव्य सौन्दर्य:- (i) शरत ऋतु का मानवीकरण किया गया है
(ii) ~~ब~~ पतंग उड़ाने को आतुर बच्चो की बालसुलभ चेष्टाओं का वर्णन है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्र.क्र.

iii) भाषा सरल, सहज एवं भावाभिव्यक्ति में पूर्ण है।

प्रश्नोत्तर क्र - 2।

एक बार _ _ _ _ _ _ _ _ _ दे दी।

सन्दर्भ:- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक आरोह मे संकलित पाठ पहलवान की ढोलक से अवतरित है। इसके रचयिता फणीश्वरनाथ रेणु है।

3 प्रसंग:- प्रस्तुत गद्यांश में लुट्टन व ढोल की आवाज की आवाज के मध्य ताल-मेल का वर्णन किया गया है।

व्याख्या:- एक बार पहलवान लुट्टन सिंह श्यामनगर के मेले मे दंगल का खेल देखने गया। यहाँ पहलवानो की कुशती का खेल हो रहा था ऐसे में ढोल की आवाज ने लुट्टन की नसों मे बिजली अर्थात ऊर्जा उत्पन्न कर दी और उसके बिना सोचे-समझे पंजाब के पहलवान चाँद सिंह को चुनौती अर्थात उससे कुशती लड़ने की ठान ली। ढोलक की आवाज लुट्टन की नसो में बिजली उत्पन्न करती थी उसे लगता था कि ढोल की आवाज उसे कुशती के दांव-पेंच सिखा रही है। चाँद सिंह पहलवान की प्रसिद्धि शेर के बच्चें के रूप में थी अर्थात् उसे शेर के बच्चे का टायटल प्राप्त था।

प्रश्न क्र.

काव्य सौन्दर्य:- (i) लुटन व ढोल की आवाज के मध्य सम्बन्धों का वर्णन है।

(ii) चाँद सिंह पहलवान को प्राप्त टायटिल का प्रयोग किया गया है।

(iii) भाषा सीधी, सरल, खड़ी बोली है।

BSE

प्रश्नक.

प्रश्नोत्तर क्र-22

15- राहुल नगर
भोपाल (म.प्र.)
दिनांक - 1.03.2023

सेवा में,
जिलाधीश महोदय,
जिलाध्यक्ष कार्यालय,
भोपाल (म.प्र.)

विषय:- ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु।

महोदय,

उपरोक्त विषय में निवेदन है कि मैं राहुल नगर की निवासी हूँ। जैसा कि आप जानते है कि माध्यमिक शिक्षा मण्डल की परीक्षाएँ कुछ ही दिनो मे ~~आयोजित~~ प्रारंभ होने वाली है। सभी विद्यार्थी अपने-अपने अध्ययन में व्यस्त हैं किन्तु हमारे नगरवासी बहुत ऊँचो स्वरो मे ध्वनि विस्तारक यंत्रो का प्रयोग कर रहे है। ऐसे मे सभी छात्र एकाग्रचित होकर अध्ययन नहीं कर पा रहे है। यहाँ पिछले दो दिनों से लगातार लाउडस्पीकरो का प्रयोग जारी है।

अतः आपसे निवेदन है कि ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर प्रतिबन्ध लगाए ताकि हम अपना अध्ययन जारी रख सके।

भवदीय
नेहा शर्मा

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क -23

★विद्यार्थी और ~~अनुशाइ~~ अनुशासन★

रूपरेखा:-

(i) प्रस्तावना
(ii) अनुशासन के भेद
(iii) विद्यार्थी और अनुशासन
(iv) अनुशासन के लाभ
(v) अनुशासन के अभाव मे
(vi) उपसंहार

B S E

"शासक बनकर गर जीवन मे करना चाहते हो तो तुम शासन
विद्यार्थी जीवन से तपो, अपनाओ तुम अनुशासन"

(i) प्रस्तावना- प्रकृति ने हमे एक सुन्दर तथा सुव्यवस्थित पर्यावरण प्रदान किया है। प्रकृति का प्रत्येक कार्य अनुशासित है जैसे-सूर्य अपने समय पर उदित होता है चन्द्रमा और तारे भी अपने-अपने समय पर आकाश मे आते है। हम ऋतु प्रकृति प्रदत्त समय-सीमा का पालन करते है इसे ही अनुशासन कहते है। ~~अनुस~~ अनुशासन जीवन मे अत्यन्त महत्वपूर्ण है अनुशासन के अभाव मे व्यक्ति का जीवन पशु के समान है। पशुओ व मानव मे सबसे बड़ा भेद अनुशासित ~~ले~~ जीवन जीना है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

(ii) अनुशासन के भेद- अनुशासन दो शब्दो से मिलकर बना है जिसका अर्थ है नियमों का पालन करना या उसके पीछे चलना। इसके दो भेद होते है बाहरी अनुशासन व आन्तरिक अनुशासन। बाहरी अनुशासन मे व्यक्ति दण्ड मिलने के भय से अनुशासन का पालन करता है जबकि आन्तरिक अनुशासन मे व्यक्ति अपनी इच्छा से अनुशासित रहता है। बाहरी अनुशासन केवल दण्ड मिलने के भय तक ही सीमित है भय समाप्त अनुशासन समाप्त जबकि आन्तरिक अनुशासन व्यक्ति क के साथ सदैव बना रहता है व उसे जीवन मे आगे बढाता है।

B
S
E

(iii) विद्यार्थी अनुशासनः- विद्यार्थी जीवन एक व्यक्ति का निर्माणकाल होता है। इसी मे वह अपने जीवन के मूल्यवान तत्वों का अध्ययन करता है। यदि किसी कक्षा मे पढाई हो और बाहर से शोर आए तो वह अनुशासित विद्यालय नही है। विद्यार्थी जीवन मे अनुशासन का विशेष महत्व है क्योंकि यही एक विद्यार्थी को विकास के मार्ग आगे बढाता है और वह अपने जीवन मे अनुशासित रहकर प्रगति कर सकता है। यदि एक ए विद्यार्थी अपनी समय-सारिणी का पालन करके अध्ययन करता है तो वह सदैव सफल होता है जबकि कल पर निर्भर रहने वाला व्यक्ति कभी जीवन मे सफलता प्राप्त नही कर सकता है।

(iv) अनुशासन के लाभ- अनुशासन से जीवन मे अनेक

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

लाभ है न केवल विद्यार्थी वर्ग मे बल्कि जीवन मे हर व्यक्ति को हर लक्ष्य को प्राप्त करने मे इसकी आवश्यकता होती है। यदि कोई व्यक्ति हमेशा अपने काम को समय से पूरा नही करता है तो वह समाज का सबसे लापरवाह व्यक्ति माना जाता है। एक अनुशासित सदैव दूसरो को अनुशासन सिखाता है बल्कि स्वयं भी प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रहता है। निराशा व असफलता उसे कभी रोकती नहीं है।

(iv) अनुशासन के अभाव मे:- जहाँ अनुशासन के साथ अनेक लाभ है वही इसके अभाव मे अनेक हानियाँ भी। बडी से बडी परीक्षाओं की तैयारियो मे प्रतिदिन अनुशासित रहकर तैयारी करने से ही सफलता प्राप्त होती है अनुशासनहीनता किसी भी ~~व्यक्ति~~ व्यक्ति की असफलता का सबसे प्रमुख कारण है।

BSE

(v) उपसंहार:- अन्त मे यदि व्यक्ति को जीवन मे सफल होना है और निरन्तर प्रगति करना है तो ही वह अपने देश व समाज की उन्नति कर सकता है। हमे सदैव अनुशासन मे रहकर अपनी देश को प्रदर्शित करना चाहिए। कोई भी कार्य ऐसा न हो जिससे हमारे देश पर कोई कलंक लगे। अतः एक अनुशासित देश / राष्ट्र ही सदैव विश्व मे सबसे आगे व सबसे महान होता है। अनुशासन किसी भी देश, व्यवसाय, व्यापार का मूल आधार है। हर विद्यार्थी का कर्तव्य है कि वह सदैव ~~अनुसा~~ अनुशासन का पालन करें।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्र. क्र.

प्रश्नोत्तर क्र - 11

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखने से नि. लि. गुण विकसित होते हैं:

(i) व्यक्ति में आत्मनिर्भरता आती है।

(ii) अभिव्यक्ति के अधिकार का अनुभव होता है।

(iii) रट्ल रंटत की कुटेव लत से बचा जाता है।

BSE